राहुल की मेहनत ने रंग दिखाया

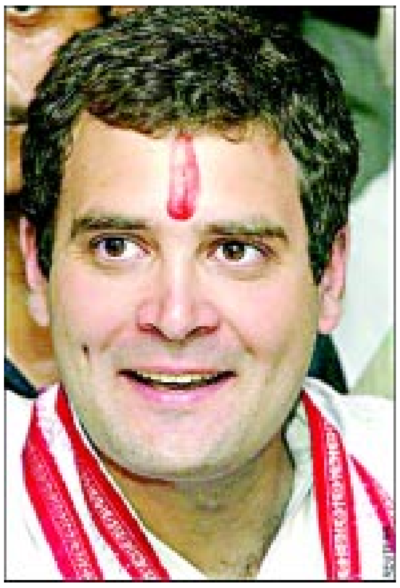

गरीबी की सच्चाई, उसकी वेदना और मर्म को जानने के लिए कांग्रेस महासचिव राहुल गांधी का गांवों में जाना गरीबों की कुटिया में ठहरना और साग –रोटी खाना इस चुनाव में आम लोगों को शायद बहुत अच्छा लगा। सम्भवत: इसी वजह से कांग्रेस को अपेक्षा से बहुत अधिक सफलता हासिल हुई।

गांधी के इस प्रयास का कुछ राजनीतिक दलों ने उपहास भी किया था लेकिन अब वह जनादेश को कबूल कर रहे हैं। राहुल के प्रयासों से विशेषकर उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश में कांग्रेस मजबूत हुई और पश्चिम बंगाल में वामपंथियों के किले में सेंध लगी। प्रधानमंत्री डा0 मनमोहन सिंह ने राहुल की मेहनत की सराहना करते हुए उनके लिए केन्द्रीय मंत्रिमंडल का दरवाजा खोल दिया है।

कांग्रेस के दिग्गज नेताओं ने पार्टी की इस अद्‌भुत सफलता के लिए गांधी की मुक्त स्वर से प्रशंसा की। इस प्रशंसा को अनायास नहीं कहा जा सकता। वास्तव में राहुल ने इस चुनाव में कांग्रेस की सफलता के लिए अपनी सारी शक्ति झोंक दी थी। हजारों किलोमीटर की यात्राओं और रोड शो के दौरान राहुल पर लाल गुलाब की पंखुडियों की बरसात दिखावटी नहीं बल्कि लोगों का कांग्रेस की ओर आशा भरी नजर से देखने का प्रतीक था जो आज मतगणना के बाद सच हो गया।

राहुल गांधी के धुंआधार चुनाव प्रचार के दौरान अचानक सुरक्षा घेरे को तोड़कर आम लोगों के बीच जाने, उनक ा अभिवादन करने, उनकी समस्याएं सुनने, उनके आवेदनों पर कार्रवाई करने, पार्टी संगठन को मजबूत करने और सच्चाई की सार्वजनिक रुप से स्वीकारोक्ति ने यह स्पष्ट कर दिया कि वह राजनीति के हर मर्म को समझने लगे हैं।चुनाव प्रचार के दौरान विकास कार्यो की राशि गांव तक नहीं पहुंचने और केन्द्रीय संस्थाओं पर सरकार के प्रभाव आदि पर उनके बेबाक वक्तव्य ने उनकी परिपक्वता को दर्शाया। उनके पिता राजीव गांधी भी राजनीति में आने पर इसी तरह से अपनी राय जाहिर करते थे।

सोनिया-राहुल ने किया चमत्कार!

पहले पेज से जारी...

संप्रग के नेताओं के मंगलवार को राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल से मुलाकात कर दावा पेश करने की सम्भावना है।

लोकसभा चुनाव में शानदार जीत हासिल करके बहुमत के नजदीक पहुंचने के बाद संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन ने अब अपना ध्यान सरकार बनाने और अपनी प्रमुख पार्टी कांग्रेस तथा चुनाव में बेहतरीन प्रदर्शन करने वाली तृणमूल कांग्रेस और द्रमुक समेत अपने सहयोगी दलों को मंत्रालयों के वितरण पर लगा दिया है। नई कैबिनेट में कांग्रेस नेताओं प्रणव मुखर्जी, पी. चिदम्बरम, कमलनाथ तथा कपिल सिब्बल को जगह मिलने की सबसे प्रबल सम्भावना है। साथ ही राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रमुख शरद पवार और प्रफुल्ल पटेल, द्रमुक नेता टीआर बालू, ए. राजा तथा दयानिधि मारन के अलावा नेशनल कांफ्रेंस के अध्यक्ष फारुक अब्दुल्ला को भी नई मंत्रिपरिषद में जगह मिल सकती है।

पश्चिम बंगाल में 19 सीटों पर कामयाबी हासिल करने वाली तश्णमूल कांग्रेस की अध्यक्ष ममता बनर्जी तथा द्रमुक प्रमुख एम. करुणानिधि के पुत्र एमके अझगिरि मंत्रिपरिषद में नए चेहरे के रूप में शामिल किए जा सकते हैं। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह द्वारा इस्तीफे की औपचारिकता के बाद संप्रग नेता बैठक करके मंत्रिमंडल के गठन तथा बाहर से समर्थन लेने के मुद्दे पर फैसला करेंगे। नेता चुनने के लिए कांग्रेस के नवगठित संसदीय दल की पहली बैठक अगले एक दो दिन में होने की सम्भावना है। कांग्रेस की ओर से पहले ही प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार घोषित किए जा चुके मनमोहन सिंह के संप्रग की संयुक्त बैठक में भी नेता चुने जाने की उम्मीद है।

आर्थिक मसलों पर प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की मदद करने वाले योजना आयोग के उपाध्यक्ष मोंटेक सिंह अहलूवालिया को भावी वित्त मंत्री के रूप में देखा जा रहा है। विदेश मंत्री प्रणव मुखर्जी को फिलहाल वित्त मंत्रालय का अतिरिक्त कार्यभार दिया गया है।

चुनाव के दौरान तमिलनाडु में कांग्रेस के प्रभारी रहे गुलाम नबी आजाद को भी नई मंत्रिपरिषद में जगह मिलने की सम्भावना है। अहलूवालिया को वित्त मंत्रालय मिलने की स्थिति में मुखर्जी चिदम्बरम और कमलनाथ के मौजूदा मंत्रालयों में फेरबदल किए जाने की सम्भावना नहीं है। मुखर्जी फिलहाल विदेश मंत्रालय, चिदम्बरम गृह तथा कमलनाथ वाणिज्य मंत्रालय का जिम्मा सम्भाल रहे हैं। सूत्रों का कहना है कि तकरीबन पांच साल तक कांग्रेस का साथ देने के बाद ऐन वक्त पर संप्रग से अलग हो चौथे मोर्चे में शामिल होकर चुनाव लड़ने वाले राष्ट्रीय जनता दल अध्यक्ष लालू प्रसाद को मंत्रिपरिषद में बनाए रखने या नहीं रखने का फैसला अब कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी पर निर्भर है। सोनिया ने लालू को फोन करके उन्हें सोमवार को होने वाली मंत्रिपरिषद की बैठक में शामिल होने के लिए कहा है।

इस बीच आज शाम कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक हुई जिसमें लोकसभा चुनाव में जीत के लिए प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, पार्टी अध्यक्ष सोनिया गांधी और महासचिव राहुल गांधी को बधाई दी गई। बैठक के बाद वरिष्ठ नेता कर्ण सिंह ने बताया कि राहुल गांधी को कैबिनेट में लेने का विशेषाधिकार प्रधानमंत्री का है और कांग्रेस कार्यसमिति में इस पर कोई चर्चा नहीं हुई।

पहले पेज से जारी...

नये चेहरों ने दिग्गजों को दी मात

कांग्रेस ने जब अपने लोकसभा उम्मीदवारों की घोषणा की थी, तब कुछ नामों को लेकर राजनीतिक समीक्षकों ने आश्चर्य व्यक्त किया था. मंदसौर से भाजपा के आठ बार चुनाव जीतने वाले लक्ष्मीनारायण पांडे के सामने कांग्रेस ने मीनाक्षी नटराजन को मौका दिया. मीनाक्षी को चुनाव लड़वाना सीधे-सीधे राहुल गाँधी की रणनीति और दूरदृष्टि का नतीजा था. राहुल का मानना था कि इतने बार एक ही उम्मीदवार की जीत मतदाता भी पचा नहीं पाता, जरूरत है सही उम्मीदवार को मौका देने की और यह रणनीति कामयाब रही. यही स्थिति उज्जैन के बारे में रही. लगातार जीत दर्ज कराने वाले भाजपा के सत्यनारायण जटिया को प्रेमचंद गुड्डू ने मात दे दी. देवास-शाजापुर सीट पर भी भाजपा का बरसों से कब्जा था. थावरचंद गेहलोत ने पिछला चुनाव करीब दो लाख वोट से जीता था, लेकिन इस बार युवा चेहरे सज्ज्नसिंह वर्मा ने उन्हें मात दे दी. खंडवा में लगातार चार बार लोकसभा का चुनाव जीतने वाले नंदकुमार सिंह चौहान को युवा चेहरे अरुण यादव ने चित कर दिया.

गौर करने वाली बात यह भी है कि जीतकर कांग्रेस के लिए नई जमीन तलाशने वाले इन चारों युवा चेहरों ने अपना इलाका छोड़कर चुनाव लड़ा. मीनाक्षी नटराजन मूलतः रतलाम की हैं, पर उन्होंने मंदसौर जाकर चुनाव लड़ा. प्रेमचंद गुड्डू इंदौर के हैं, पर उन्होंने उज्जैन जाकर चुनाव लड़ा और पार्टी की अपेक्षा के अनुरूप जीते भी. सज्ज्नन वर्मा मूलतः इंदौर के हैं और सोनकच्छ विधानसभा क्षेत्र से विधायक हैं. कांग्रेस ने काफी सोच-विचार के बाद उन्हें देवास-शाजापुर सीट से चुनाव लड़ाने का फैसला किया, जो सही साबित हुआ.

अरुण यादव को खरगोन सीट इसलिए छोड़ना पड़ी, क्योंकि परिसीमन के कारण वह आरक्षित हो गई थी. ऐसी स्थिति में पार्टी को लगा कि वे ही भाजपा के नंदकुमारसिंह चौहान को चुनौती दे सकते हैं और यह रणनीति सही भी साबित हुई. इंदौर से भले ही भाजपा की सुमित्रा महाजन चुनाव जीत गई हों, पर उन्हें कांग्रेस के सत्यनारायण पटेल ने जिस तरह चुनौती दी, वह तारीफ के काबिल है. पिछला चुनाव डेढ़ लाख से ज्यादा वोट से जीतने वालीं श्रीमती महाजन की जीत मात्र 11 हजार पर सिमट गई. धार से गजेंद्रसिंह राजूखेड़ी भी उन युवा चेहरों में से एक हैं जिन्हें राहुल गाँधी ने हाल का विधानसभा चुनाव हारने के बावजूद लोकसभा उम्मीदवार के रूप में चुना था. उनका विश्वास कायम भी रहा. कांग्रेस के इन चार चेहरों ने यह साबित कर दिया कि भाजपा को अभी तक यहाँ सिर्फ हराया नहीं जा सका था, क्योंकि मतदाता के मानस को समझा नहीं जा सका था.

योग्यता की ताकत का प्रामाणिक जनादेश!

चुनाव-चक्रम

सुरेन्द्र बंसल

यह किसकी जीत है, सोनिया की राजनीति की, कांगेस के अनुभव की, मनमोहन सरकार के काम की या राहुल के नौजवान जज्बे की. ये सब बातें कहीं न कहीं एकजुट होकर जनादेश 2009 की ताकत बनकर उभरीं हैं. परिणाम हम सब देख रहें हैं और इससे कुछ नए लक्षण भी कुछ अच्छाई लेकर उभरें हैं. राजनीति अब क्षेत्रियता से उभर कर केंद्रीय महत्व की ओर फिर लौटने लगी है ये लक्षण भारतीय राजनीति को मजबूत करेंगे. चुनाव चक्रम की यह परिणिति देश के लिए शुभ संकेत है.

दरअसल जो तत्व भारतीय राजनीति को चाहिए थे वे इस आम चुनाव के जनादेश से मिलना शुरु हो गए हैं. तत्व ही वे लक्षण तैयार करते हें जिससे एक नया चेहरा निर्मित होता है, भारतीय राजनीति का एक नया चेहरा इस चुनाव से तैयार होने जा रहा है और जो बनते नजर आ रहा है वह यह है कि क्षेत्रवाद के आधार पर तैयार हुए छोटे और क्षेत्रिय राजनैतिक दलों की अब उतनी भूमिका नहीं रहेगी जिससे वे स्थानीय मुद्दों से केंद्रीय मुद्दों को प्रभावित कर सकें. छोटे दलों पर जो लगाम जरुरी थी वह इस चुनाव से कसने लगी है.

यह चुनाव सोनिया गांधी के राजनैतिक तत्व के भी हैं. परिपक्व राजनीतिज्ञ का प्रदर्शन सोनिया का रहा है उसके साथ कांगेस का राज करने का लंबा अनुभव भी इस चुनाव में काम आया है. जो सरकार कमरतोड़ महंगाई के बाद दम निकालूं मंदी के दौर से गुजरी हो और जिसका व्यापक असर देश और जनता ने भोगा हो वहां फिर बढ़ती ताकत से चुनाव जीत लेना महज इत्तफाक नहीं है.और इसलिए भी कि जिस सरकार के मुखिया को कमजोर प्रचारित कर चुनाव में चुनौतियां दी गई वहां बेहतर जीत की जमीन तैयार हो जाए तो जाहिर है जनता कुछ अलग और बेहतर सोचती है. सबसे बड़ा फेक्टर जो इस चुनाव में उभर कर आया है वह युवा भागीदारी का है. राहुल गांधी ने इस नए फेक्टर को ताकत दी है और इसे कांगेस के पक्ष में भुनाया भी है. उनके युवा नेतृत्व की सोच का व्यापक असर हुआ है हालांकि 80 पार के लालकृष्ण आड़वाणी के समक्ष लगभग उतने ही उम्रदराज मनमोहनसिंह को प्रोजेक्ट कर कंग्रेस ने भी युवाओं को मनमोहने वाला नेतृत्व नहीं दिया लेकिन राहुल गांधी की सक्रियता ने युवाओं को यह भरोसा जरुर दिया कि कांग्रेस के पास युवा नेता हैं. राहुल इस दिशा में चल भी रहे हैं और अपनी ब्रिगेड तैयार कर रहे हैं.उनका जज्बा कुछ नया करने का नजर आता है और वे जो नई जमीन तैयार कर रहे हैं वह कांगेस के लिए संजीवनी बन रही है.

कांग्रेस का फैलाव इस देश में व्यापक है. देश के सम्पूर्ण भौगोलिक फैलाव में वह हर जगह खड़ी नजर आती है जबकि भाजपा के लिए यह दुविधा है कि वह केंद्र में राज करने के बावजूद देशभर में अपनी जमीन का फैलाव नहीं कर सकी यह भाजपा की सबसे बड़ी अयोग्यता है, यह भी कि वह युवा छबि वाला नेतृत्व खड़ा नहीं कर सकी. कुछ देर से वरुण को प्रोजेक्ट किया तो उन्हें विवादों से दूर नहीं रख सकी. अनुभव से भाजपा ने कुछ सीखा नहीं और कोई रणनीतिज्ञता नहीं दिखाई. एनडीए की बडी संख्यात्मक ताकत पर भाजपा गुरुर करती रही लेकिन अपनी ही जमीन को बचाए रखने में वह नाकाम रही. जम्मू, उत्तरांचल,पंजाब, हरियाणा,राजस्थान और कुछ हद तक गुजरात और मप्र भी भाजपा व उसके सहयोगी दल बनी हुई ताकत बचा कर नहीं रख सके.

भारत जैसे विशाल और भिन्न-भिन्न समुदाय,धर्म और संस्कृति के देश में राजनीति सिर्फ विचार पर नहीं चलाई जा सकती इसके लिए नीतिगत योग्यता फैलाव बहुत जरुरी है.इसके लिए जरुरी है कि आप सबसे पहले भारत की विशालता के अनुसार अपनी सशक्त जमीन तैयार करें और किसी तरह के बायपास की जगह सीधी एप्रेच करें. इस कमी को दूर किए बगैर भाजपा सम्पूर्ण राष्ट्रीय दल नही बन सकती. कांग्रेस में ये सब योग्यताएं हैं. बहुतेरी कमजोरियों के बावजूद कांग्रेस अपनी योग्य प्रामाणिक ताकत तैयार कर सकी है और 2009 के लोकसभा चुनाव उसकी योग्यता की ताकत का प्रामाणिक जनादेश है।

स्वामी मुद्रक प्रकाशक एवं संपादक उत्तम झंवर द्वारा मे. मोर्या आर्ट प्रा.लि. के लिये अपनी दुनिया प्रिन्टर्स १३, प्रेस काम्पलेक्स एबी रोड इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं ३०५ मोर्या आर्केड १/२ ओल्ड पलासिया, इंदौर में प्रकाशित फोन : ४०४१२६८